



222hi07

7

चिन्तन और समस्या समाधान

क्या आपने कभी सोचा है कि आज जो भी जानकारी आपको है, उसका ज्ञान आपने कहाँ से प्राप्त किया? तुरन्त ही आपके मस्तिष्क में यह विचार आता है कि आपके शिक्षकों ने आपको यह सब पढ़ाया है, आपके माता-पिता ने आपको यह सिखाया या पुस्तकें पढ़ने से आपको ये सब जानकारी हुई है। इन सब स्थितियों में आपने अपने ज्ञान बढ़ाने के लिए ही कुछ सीखा है। इसलिए, जानने की प्रक्रिया या ज्ञान-अर्जित करने को संज्ञान कहते हैं। ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया को संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ जैसे अवधान, चिन्तन, स्मरण एवं तर्क, सुगम बनाती हैं। इन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को मस्तिष्क का उच्च केन्द्र, प्रमस्तिष्क वल्क्युट (सेरिब्रल कॉरटेक्स), नियमित एवं नियंत्रित करता है। ये संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ व्यक्ति के लिए विशिष्ट हैं और इनका परिचलन संकल्पना, तथ्य, कथन, नियम और स्मरण शक्ति द्वारा किया जाता है। ये सभी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ चिन्तन द्वारा ही नियंत्रित हैं। अतः इस पाठ में आप चिन्तन क्या है, समस्या समाधान के चरण, रचनात्मक चिन्तन और निर्णय लेने में संलग्न प्रक्रियाओं के बारे में पढ़ेंगे।



उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप:

- चिन्तन की प्रक्रिया को समझा सकेंगे;
- समस्या समाधान के विभिन्न सोपान का वर्णन कर सकेंगे;
- सृजनात्मकता और जीवन में इसके महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- निर्णय लेने की प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेंगे।

7.1 चिन्तन की प्रकृति

चिन्तन सम्भवतः एक ऐसी प्रक्रिया है जो सोते समय भी क्रियाशील रहती है। चिन्तन क्या है और चिन्तन क्या नहीं है; दोनों में अन्तर केवल विशेष चिन्तन प्रक्रिया के बारे में हमारी सजगता है।



चिन्तन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें सूचनाओं का कुशलता से उपयोग होता है। इस प्रकार की सूचनाएँ ज्ञानेन्द्रियों (जैसे दृष्टि, श्रवणशक्ति, घ्राण शक्ति) द्वारा पर्यावरण के साथ ही, स्मृति में संचित पूर्वकाल की कतिपय घटनाओं से एकत्रित की जाती हैं। अतः चिन्तन एक **रचनात्मक प्रक्रिया** है अर्थात् यह किसी घटना या वस्तु की प्राप्त सूचना को नवीन रूप में रूपान्तरित करने में हमारी सहायता करती है। इसमें कई मानसिक क्रियाएँ जैसे अनुमान करना, तर्क करना, कल्पना करना, निर्णय लेना, अभूतीकरण, समस्या समाधान और रचनात्मक विचार (चिन्तन) सम्मिलित हैं। ऐसी क्रियाएँ हमारे मस्तिष्क में होती हैं और हमारे व्यवहार द्वारा अनुमानित की जाती हैं। चिन्तन का आरम्भ प्रायः एक समस्या से होता है और ये कई चरणों में चलता है जैसे निर्णय लेना, अनुमान करना, संक्षेपीकरण, तर्क करना, कल्पना और स्मरण करना। ये क्रम अधिकतर समस्या के समाधान के लिए होता है। निम्नलिखित उदाहरण आपको यह समझने में अच्छी तरह सहायता करेगा।

मान लो कि आप अपने नए विद्यालय समय पर पहुँचने के लिए अपने घर से विद्यालय तक का सबसे छोटा रास्ता ढूँढ रहे हों। आपके चुनाव को कई कारक निर्देशित कर सकते हैं जैसे सड़क की दशा, स्कूल का समय, यातायात का घनत्व, सड़क पर चलते हुए सुरक्षा इत्यादि। अंततः इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए आप सबसे उत्तम मार्ग का ही निर्णय लेते हैं। इसलिए इस जैसी साधारण सी समस्या के लिए भी चिन्तन आवश्यक है। इस समस्या का समाधान हमारे पर्यावरण एवं पूर्व अनुभव से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर होता है। चिन्तन कई प्रकार की मानसिक संरचनाओं पर निर्भर करता है जैसे **संकल्पना** एवं **तर्क**। हम मानसिक संरचनाओं के विषय में संक्षेप में पढ़ेंगे।

संकल्पना : संकल्पना चिन्तन का एक मुख्य तत्व है। संकल्पनाएँ वस्तुओं, क्रियाओं, विचारों व जीवित प्राणियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके **लक्षण** भी होते हैं (जैसे "खट्टा" और "वीर"), **विमनस्कता** (जैसे "क्रोध" या "भय") और **सम्बन्ध** (जैसे "उससे छोटा" या "उससे अधिक बुद्धिमान")। संकल्पनाएँ ऐसी मानसिक संरचनाएँ हैं जो हमारे **ज्ञान को क्रमबद्ध रूप** प्रदान करती हैं। हम उनका सीधे निरीक्षण नहीं कर सकते हैं, लेकिन हम उनका व्यवहार द्वारा अनुमान लगा सकते हैं।

मनुष्य होने के कारण, हमारे पास वस्तुओं, घटनाओं या प्रत्यक्ष की गई बातों के आवश्यक लक्षणों को अमूर्त रूप में धारण करने की शक्ति होती है। उदाहरण के लिए, जब हम आलू देखते हैं तो हम उसे "सब्जी" की श्रेणी में रखते हैं; यदि हम तौलिया देखते हैं तो हम उसे 'वस्त्र' की श्रेणी में रखते हैं। जब भी कभी हम किसी नए उद्दीपक से परिचित होते हैं तो हम उसे एक पहचानी हुई या याद की गई श्रेणी में रखते हैं और उसके साथ उसी प्रकार की क्रिया करते हैं और उसे नाम देते हैं।

तर्क: तर्क भी चिन्तन का एक मुख्य पक्ष है। इस प्रक्रिया में अनुमान संलग्न है। तर्क, तर्कपूर्ण विचार व समस्या के समाधान में उपयोग होता है। यह उद्देश्यपूर्ण होता है और तथ्यों से निष्कर्ष निकाले जाते हैं व निर्णय लिए जाते हैं। तर्क में हम पर्यावरण से प्राप्त जानकारी और मस्तिष्क

मॉड्यूल-II

मनोविज्ञान की
मूलभूत प्रक्रियाएँ

टिप्पणी

में एकत्र सूचनाओं का कतिपय नियमों के अन्तर्गत उपयोग करते हैं। तर्क दो प्रकार का होता है— **निगमन** और **आगमन**। **निगमन तर्क** में हम पहले दिए गए कथन के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। जबकि **आगमन तर्क** में हम उपलब्ध प्रमाण से निष्कर्ष निकालने से आरम्भ करते हैं। अधिकतर वैज्ञानिक तर्क आगमन प्रकृति के होते हैं। वैज्ञानिक हों या साधारण व्यक्ति कुछ घटनाओं के आधार पर सभी के लिए कुछ सामान्य नियम होते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति पुजारी है क्योंकि वह साधारण वस्त्र पहनता है, प्रार्थना करता है और सादा भोजन करता है।



पाठगत प्रश्न 7.1

1. चिन्तन क्या है?
2. चिन्तन के विभिन्न घटक कौन-कौन से हैं?

7.2 समस्या समाधान

समस्या को सुलझाना हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। हर दिन हम सरल से लेकर जटिल समस्याओं का समाधान करते हैं। कुछ समस्याओं को हल करने में कम समय लगता है और कुछ में अधिक। किसी समस्या का समाधान करने के लिए यदि समुचित साधन उपलब्ध नहीं होते तो समाधान का विकल्प देखना पड़ता है।

किसी भी प्रकार की **समस्या** का समाधान निकालने में हमारा चिन्तन **निर्देशित** और **केंद्रित** हो जाता है, और **सही** और **उपयुक्त निर्णय** पर पहुंचने के लिए हम सभी संसाधनों आंतरित (मन) और बाह्य (दूसरों का समर्थन और सहायता) दोनों का उपयोग करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप एक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना चाहते हैं तो आप मेहनत से पढ़ाई, शिक्षकों, मित्रों और माता-पिता की सहायता लेते हैं और अंत में आप अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार **समस्या** समाधान एक विशिष्ट समस्या से निपटने की दिशा में **निर्देशित चिन्तन** है। इस सोच के तीन तत्व हैं: **समस्या**, **लक्ष्य** और लक्ष्य दिशा में एक कदम। ऐसी दो विधियाँ हैं जिनका प्रमुख रूप से समस्या समाधान में उपयोग किया जाता है, ये हैं 'मध्यमान-अंत-विश्लेषण' और 'एल्गोरिद्म' या कलन विधि। मध्यमान-अंत-विश्लेषण में विशेष प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में एक विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया का चरणबद्ध प्रयोग किया जाता है। **ह्यूरिस्टिक्स** या अन्वेषणात्मक के मामले में व्यक्ति समस्या समाधान के लिए किसी संभव नियम या विचार का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र है। इसे **अभिसूचक नियम** (रूल आफ थम्ब) भी कहा जाता है।

समस्या को हल करना और मनःस्थिति : कभी-कभी हम एक समस्या का समाधान करने के लिए एक विशेष रणनीति/तकनीक का उपयोग करते हैं परन्तु हम अपने प्रयास में सफल या असफल हो सकते हैं। यह व्यक्ति के सम्मुख भविष्य में आने वाली समस्याओं के लिए उपागमों का एक विन्यास तैयार करती है। समस्या भिन्न होने पर भी यह विन्यास चलता रहता है। इसके अतिरिक्त भविष्य में वैसी ही समस्या आने पर हम उसी रणनीति/तकनीक का उपयोग करते हैं और फिर से समाधान तक पहुँचने में विफल हो जाते हैं। समस्या को सुलझाने में इस तरह की घटना को मनःस्थिति कहा जाता है। मनःस्थिति, व्यक्ति की एक प्रवृत्ति है, जिससे वह नई समस्या का समाधान करने के लिए उसी तरीके से हल करना चाहता है जिसे उसने पहली समस्या का समाधान करने में प्रयोग किया था। एक विशेष नियम के तहत पिछले प्रयासों में प्राप्त सफलता एक तरह की मानसिक कठोरता उत्पन्न करती है जो नई समस्या का समाधान करने में नए विचारों को उत्पन्न करने में रुकावट उत्पन्न करती है। एक मनःस्थिति हमारी मानसिक क्रियाओं को बाधित करती है या उनकी गुणवत्ता को प्रभावित करती है; फिर भी हम वास्तविक जीवन की वैसी ही या सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने में हम प्रायः अतीत की सीख और अनुभव पर भरोसा करते हैं।



पाठगत प्रश्न 7.2

1. समस्या के समाधान को परिभाषित कीजिए। समस्या समाधान के दो प्रकारों पर चर्चा कीजिए।
2. समस्या को सुलझाने में मनःस्थिति की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

7.3 सृजनात्मकता और जीवन में इसकी भूमिका

क्या आप जानते हैं कि जो कुछ भी आप आसपास देखते हैं; जैसे वस्तुएँ जो आप दैनिक जीवन में काम करने के लिए उपयोग करते हैं, परिवहन, आप एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए उपयोग करते हैं, सभी प्रकार के उत्पाद इत्यादि, मानवीय सोच का परिणाम हैं? सृजनात्मक, चिन्तन का एक विशेष प्रकार है जो एक अद्वितीय और नया तरीका है जो पहले अनुपस्थित था। सृजनात्मकता का परिणाम दुनिया के सभी आविष्कार और खोज हैं। समस्याओं के नियमित समाधान के विपरीत, **सृजनात्मक समाधान**, मूल, नवीन (नया) और अद्वितीय हैं जिनके बारे में पहले सोचा नहीं गया। सृजनात्मक समाधान या विचार अचानक या तत्क्षण होता है जिसमें चेतन व अचेतन रूप से अधिक कार्य और तैयारी के परिणामस्वरूप जाने या अनजाने में होता है। नए विचारों की अचानक उपस्थिति को अन्तःदृष्टि कहा जाता है। सृजनात्मक विचारक कोई भी हो सकता है जैसे कलाकार, संगीतकार, लेखक, वैज्ञानिक या खिलाड़ी।





सृजनात्मक चिन्तन के चरण : बीसवीं सदी के अग्रणी मनोवैज्ञानिक में से एक **ग्राहम वॉल्स** ने कहा कि सृजनात्मक चिंतन के पाँच चरण होते हैं। ये हैं— **तैयारी, उद्भव, प्रदीप्ति, मूल्यांकन** और **पुनरीक्षण**। अब हम सृजनात्मक चिन्तन के इन पाँच चरणों पर संक्षेप में चर्चा करेंगे।

- 1. तैयारी :** पहले चरण में विचारक समस्या को निरूपित करता है और समाधान के लिए आवश्यक तथ्यों और सामग्रियों को एकत्र करता है। वह पाता है कि केंद्रित प्रयास करने पर भी दिन, सप्ताह या महीनों के प्रयास के बाद भी समस्या का समाधान नहीं किया जा सका। समस्या समाधान में असफलता के बाद विचारक जान बूझकर या अनायास समस्या से दूर हो जाता है और अगला चरण अर्थात् उद्भव से समाधान का प्रारम्भ करता है। समस्या के समाधान के लिए इस स्तर पर मनःस्थिति या पूर्वाग्रह के किसी भी प्रकार के नकारात्मक परिणामों पर नियंत्रण करना महत्वपूर्ण है।
- 2. उद्भव :** यह समाधान रहित चरण है और इसमें अनेकों भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक जटिलजाएँ सम्मिलित हैं। हाँलांकि, मनःस्थिति, कार्यात्मक स्थिरता और अन्य विचार जो समाधान में हस्तक्षेप कर रहे हों, नकारात्मक प्रभावों से क्षीण हो जाते हैं। संभवतः थकान और समस्या की गंभीरता, चिन्ता भी इस अवधि में उभर आते हैं। इसके अतिरिक्त इस चरण की अवधि में अचेत विचार व प्रक्रियाएँ और सृजनात्मक चिन्तन भी कार्य करने लगते हैं।
- 3. प्रदीप्ति :** इस चरण में समस्या के लिए एक संभावित हल जैसे कहीं भी नहीं है ऐसा अनुभव किया जाता है। यहाँ सम्भवतः समाधान के बारे में अन्तःदृष्टि हो रही है। प्रदीप्ति अपने "अहा" अनुभव द्वारा होता है जब अचानक एक विचार या समाधान चेतना में प्रकट होता है।
- 4. मूल्यांकन :** इस चरण में प्राप्त समाधान सत्यापित किया जाता है या यह देखा जाता है कि यह क्या काम करता है। प्रायः अंतःदृष्टि असंतोषजनक हो सकती है, और समस्या के समाधान की रणनीति में कुछ संशोधन की आवश्यकता हो सकती है।
- 5. पुनरीक्षण:** यदि समाधान संतोषजनक नहीं है तो उसे पुनरीक्षण की आवश्यकता होती है। यह पाया गया है कि सृजनात्मक लोग आमतौर पर प्रतिभाशाली होते हैं (जैसे कलाकार, संगीतकार, गणितज्ञ आदि) और उनमें विशिष्ट योग्यता होती है। सृजनात्मक लोगों के व्यक्तित्व में कुछ विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं जैसे वे अपने निर्णय में स्वतंत्र, स्वग्राही, प्रभावी, भावुक, आवेगी और जटिलता पसन्द करने वाले होते हैं।



पाठगत प्रश्न 7.3

1. सृजनात्मकता क्या है? एक सृजनात्मक व्यक्ति के संभावित लक्षण क्या-क्या हैं?

2. सृजनात्मक चिन्तन के चरणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

7.4 निर्णय लेना

हम अपने दैनिक जीवन में बहुत से निर्णय लेते हैं जैसे शिक्षा, कैरियर आदि से संबंधित। हमारा एक सही निर्णय जो हमें सफलता देता है वहीं हमारा दोषपूर्ण निर्णय वांछित परिणाम नहीं देता। निर्णय लेना एक और शब्द "निश्चय करना" के साथ संबंधित है। आइए हम चिन्तन के इन दोनों पक्षों पर चर्चा करें।

निर्णय लेना : निर्णय लेना समस्या को सुलझाने का एक रूप है जिसमें हम उपलब्ध विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प का चयन करते हैं। उदाहरण के लिए आप के सामने अपनी ग्यारहवीं कक्षा में इतिहास और मनोविज्ञान पाठ्यक्रम के बीच चुनने का विकल्प है। आप विषय का चयन करने के लिए दोनों विषयों की कक्षाओं में भाग लेते हैं। मान लीजिए, आप पाते हैं कि मनोविज्ञान की सामग्री प्रासंगिक, रोचक व नई है और शिक्षक बुद्धिमान, मित्रवत्, ज्ञानवान और अच्छा बोलने वाला है। आप को लगता है कि ये सभी गुण शिक्षक में होने चाहिए। इसलिए विषय की गुणवत्ता के बारे में निर्णय और शिक्षक के गुणों के आधार पर आप मनोविज्ञान पाठ्यक्रम चुनने का निर्णय करते हैं।

निश्चय करना : निश्चय, राय बनाने की एक प्रक्रिया है, जिसमें निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए, वस्तुओं, घटनाओं और लोगों के बारे में आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है। निश्चय की प्रक्रिया प्रायः स्वतः और सहज होती है। इसे किसी भी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। कुछ निर्णयात्मक चयन स्वभावगत होते हैं जैसे सुबह की सैर के लिए जाने के लिए तैयार होना। निश्चय में अपने चारों ओर के बारे में जानकारी (वस्तुओं, घटनाओं, व्यक्तियों आदि) का मूल्यांकन सम्मिलित है, जबकि निर्णय में विकल्पों की आवश्यकता होती है।



पाठगत प्रश्न 7.4

1. निर्णय लेना और निश्चय में क्या अंतर है? संक्षेप में चर्चा कीजिए।



आपने क्या सीखा

- जानने या ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को संज्ञान कहा जाता है। ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को अवधान जैसी प्रक्रियाओं द्वारा जैसे चिन्तन, स्मरण और तर्क द्वारा बल मिलता





है। इन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को मस्तिष्क का उच्च केंद्र, (सेरीब्रल कार्टेक्स) नियमित और नियंत्रित करता है।

- चिन्तन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं का फेरलबदल करना सम्मिलित है। ये सूचनाएं हमें वातावरण से हमारी इंद्रियों (आंख, कान, नाक आदि) द्वारा प्राप्त होती हैं, या हमारी स्मृति पर आधारित जानकारी जिसे भविष्य में किन्ही समस्याओं के समाधान में प्रयोग किया जाता है।
- चिन्तन इस आशय से एक सृजनात्मक प्रक्रिया है कि यह हमें उपलब्ध जानकारी को रूपान्तरित करके किसी भी वस्तु या घटना का एक नए प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करने में सहायता करता है। इसमें अनेक मानसिक क्रियाएं सम्मिलित हैं जैसे अनुमान लगाना, संक्षिप्तीकरण, तर्क, कल्पना, निर्णय लेना, समस्या समाधान और सृजनात्मक चिन्तन।
- संकल्पनाएँ चिन्तन के प्रमुख तत्वों में से एक है। संकल्पनाएँ, मानसिक संरचनाएँ हैं जो हमें ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करने की व्यवस्था देती हैं। हम सीधे उनका निरीक्षण नहीं कर सकते लेकिन हम व्यवहार से उनका अनुमान लगा सकते हैं।
- तर्क, चिन्तन का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें अनुमान सम्मिलित है। तर्क का उपयोग तार्किक चिन्तन और समस्या समाधान में किया जाता है। यह लक्ष्य निर्देशित है और निष्कर्ष या निर्णय तथ्यों के एक समूह से निकाले जाते हैं।
- तर्क दो प्रकार के होते हैं, निगमनात्मक और आगमनात्मक। निगमनात्मक तर्क में हम प्रारंभिक निश्चयात्मक कथन के एक समूह से निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं जबकि आगमनात्मक तर्क में निष्कर्ष निकालने के लिए हम उपलब्ध साक्ष्यों से कुछ की संभावना के बारे में प्रारम्भ करते हैं।
- एक विशिष्ट समस्या से निपटने पर केंद्रित-समस्या-समाधान निर्देशित चिन्तन है। इसके तीन तत्व हैं, **समस्या, लक्ष्य और लक्ष्य तक पहुँचने के चरण**।
- मनःस्थिति, व्यक्ति की एक नई समस्या के प्रति पूर्व में समस्या समाधान हेतु प्रयुक्त विधि से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति है। एक विशेष नियम के तहत पिछली सफलता, कठोर व स्थिर मनःस्थिति की तरह है जो नए विचारों को पैदा करने की प्रक्रिया के लिए एक नई समस्या को हल करने में बाधा उत्पन्न करता है।
- सृजनात्मकता चिन्तन का एक विशेष प्रकार है जिसमें एक अद्वितीय और नवीन तरीका है जो पहले अस्तित्व में नहीं था। समस्या के समाधान तक पहुँचने के लिए सृजनात्मकता दुनिया में सभी आविष्कार और खोजों की जननी है। सृजनात्मक समाधान नवीन, मौलिक और अद्वितीय होते हैं जो दूसरों ने पहले नहीं सोचे थे।
- सृजनात्मक चिन्तन के पाँच चरण हैं ये हैं तैयारी, उद्भव, प्रदीप्ति, मूल्यांकन और पुनरीक्षण।
- निर्णय लेना एक प्रकार का समस्या समाधान है। जिसमें हम उपलब्ध विकल्पों में से एक उपयुक्त विकल्प का चयन करते हैं। निश्चय, राय बनाने की एक प्रक्रिया है जिसमें

वस्तुओं, घटनाओं और व्यक्तियों के बारे में उपलब्ध जानकारी के आलोचनात्मक मूल्यांकन पर आधारित है।



पाठान्त प्रश्न

1. प्रत्येक के लिए कोई दो उदाहरण दीजिए:
(क) संकल्पनाएं (ख) तर्क (ग) समस्या समाधान
2. किन्हीं पाँच रचनात्मक व्यक्तियों के जो भारत में प्रसिद्ध हैं, नाम बताइए।
3. निर्णय लेने की संकल्पना और दैनिक जीवन में इसके महत्व को समझाइए।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. जटिल मानसिक प्रक्रिया में सूचना का फेरबदल
2. संकल्पनाएं और तर्क

7.2

1. एक विशेष समस्या निर्देशित-चिन्तन पर केन्द्रित होता है अर्थात् विश्लेषण और एल्गोरिद्म।
2. मनःस्थिति मानसिक गतिविधियों की गुणवत्ता को रोकती है।

7.3

1. चिन्तन जिसमें अद्वितीय और नए तरीके हैं, से समस्या का समाधान शामिल है जो पहले अस्तित्वहीन था। सृजनात्मक व्यक्ति स्वग्राही, प्रभावी, आवेगी और जटिलताओं को पसन्द करने वाला हो सकता है।
2. तैयारी करना, उद्भव, प्रदीप्ति, मूल्यांकन, पुनरीक्षण।

7.4

1. निर्णय लेना, समस्या के हल का एक प्रकार है। निर्णय लेना, विकल्प बनाने, निष्कर्ष पर पहुँचने और आलोचनात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया है।

पाठान्त प्रश्नों के लिए संकेत

1. खंड 7.1 और 7.2 देखें
2. खंड 7.3 देखें
3. खंड 7.4 देखें।

